नवशक्ति ग्रन्थमाला - ५

कल्याणी हिन्दी टीका

कालिकापुराणम्

(कालिकाखण्ड)

सम्पादक/टीकाकार

आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी

नवशक्ति प्रकाशन,

चौकाघाट, वाराणसी

२००६ ई.

(१) सतीजन्म (२) सतीविवाह
(३) सतीविहार (४) सतीवियोग
(५) सती का पार्वती रूप में पुनर्जन्म (६) सती का अर्धनारीश्वर रूप धारण
(७) सती की विशिष्ट सन्तानों का वर्णन

इस पुराण में इसकी आधारभूत चरितनायिका कालिका, सती, योगमाया का ही वर्णन है। इस समग्रग्रन्थ को विषय के आधार पर दो प्रमुख खण्डों में बाँटा जा सकता है— (१) प्रारम्भिक ४५ अध्यायों तक चरितखण्ड (पूर्वार्ध) (२) अन्तिम ४६ से ९० अध्यायों तक उपासना खण्ड (उत्तरार्ध)। अन्य प्रकार से पूर्वार्ध को कालिकाखण्ड उत्तरार्ध को कालिकेय (कालिका संतति) खण्ड के नाम से पुकारा जा सकता है। यह पुराण अपने दोनों ही अंशों में परमोपयोगी एवं महान है।

कालिका खण्ड (१-४५ अध्याय)

सतीजन्म– चरितखण्ड के प्रारम्भिक ७ अध्याय सती जन्म से सम्बन्धित पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हैं। **प्रथमअध्याय** का प्रारम्भ 'हरिपादसरोज युग्म' के वन्दन से न केवल भगवान् विष्णु और उनकी माया, अपितु हरिपद वाच्य, इन्द्र, शिव, ब्रह्मा, यम, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु आदि देवों की बन्दना, हरिपादसरोज (विष्णु) के चरणकमलों से जुड़ी हुई वैष्णवी महालक्ष्मी की वन्दना से विषय निर्देशपरक मङ्गलाचरण से होता है। (श्लोक १ से ३) जिसमें कमठादि ऋषियों द्वारा मार्कण्डेय मुनि से पूछे गये प्रश्न ही कालिकापुराण के आधार हैं। (श्लोक ९ से १३)। इसी अध्याय में कालिकापुराण की परम्परा, ब्रह्मा के दक्षादि प्रजापतियों, मरीच्यादि १० मानस पुत्रों, सन्ध्या नामक मानसी पुत्री तथा काम नामक मानस पुत्र की उत्पत्ति का भी वर्णन मिलता है।

२सरेअध्याय में ब्रह्मा के पुत्र कामदेव के नामकरण, उसके द्वारा ब्रह्मा और उनकी संततियों का मोहन, ब्रह्मा की सन्ध्या के प्रति आकृष्टि तथा ब्रह्मा से अग्निष्वात्त और बर्हिषद नामक पितरों, दक्ष से रति, क्रतु, वशिष्ठ, पुलस्त्य और अङ्गिरा से क्रमशः सोमपा, आज्यपा, सुकालिन, हविष्मत् पितरों की उत्पत्ति तथा शिव द्वारा ब्रह्मा की भर्त्सना का वर्णन ५९ श्लोकों में हुआ है।

३सरेअध्याय में कामदेव को ब्रह्मा द्वारा शाप तथा दक्षप्रजापति से रति की पत्नीरूप में प्राप्ति का वर्णन है।

४थेअध्याय में ब्रह्मा के निःश्वास से वसन्त की कामदेव के सहचर रूप में उत्तपत्ति एवं उसका सौन्दर्यवर्णन साहित्यिक बन पड़ा है।

५वेंअध्याय में शिव को सम्मोहित करने में समर्थ विष्णुमाया की स्तुति एवं ध्यान वर्णित है। इसी में भगवती हेतु काली शब्द का प्रयोग हुआ है जो कालिकापुराण का मूल चरित्र तथा इसके नामकरण का आधार है।

६ठेंअध्याय में कामदेव के सहायकों के रूप में मारगणों की उत्पत्ति तथा योगमाया की महिमा का वर्णन किया गया है।

७वेंअध्याय में कामदेव, योगमाया के सहयोग के अभाव में शिव- सम्मोहन में अपनी असमर्थता व्यक्त करता है।

८वेंअध्याय में दक्ष द्वारा महामाया कालिका की तपस्या के फलस्वरूप सतीरूप से अपनी पुत्री के रूप में उनकी प्राप्ति के वर्णन, सती की बाललीला और दक्ष के घर ब्रह्मा और नारद के आगमन की बात कही गई है।

पुराण के ९ से १३ अध्यायों तक सती-विवाह का वर्णन है। **९वेंअध्याय** में सती द्वारा नन्दाव्रत के रूप में शिव को पतिरूप में प्राप्ति के लिये प्रतिमास शिव की क्रमशः आराधना, ब्रह्मा द्वारा सती से विवाह हेतु शिव की प्रार्थना उल्लिखित है।

१०वेंअध्याय में कामप्रभाव से व्यथित भगवान् शंकर की प्रार्थना पर ब्रह्मा द्वारा दक्षगृह जाकर शिव की ओर से दक्ष से कन्यादान हेतु प्रस्ताव का वर्णन हुआ है।

११वेंअध्याय मुख्यतः शिव की बरयात्रा एवं सती विवाह से संबंधित है। इसमें सती और शिव के विवाह का वर्णन करते हुये ब्रह्मा के विचलन से शिव के ब्रह्मा पर क्रुद्ध होने, विष्णु द्वारा उन्हें मनाने का वर्णन किया गया है। यह वर्णन कालिकापुराण के उदारभाव का संकेत करता है, इस प्रसङ्ग में नारायण के ये वचन ध्यान देने योग्य हैं।

न ब्रह्मा भवतो भिन्नो न शम्भुर्ब्रह्मणस्तथा ।
न चाहं युवयोर्भिन्नोऽभिन्नत्वं सनातनम् ।।
यज्ज्योरितत्रयं स्वपरप्रकाशं कूटस्थमव्यक्तमनन्तरूपम् ।
नित्यं च दीर्घादिविशेषणाद्यैर्हीनं परं तत्त्व वयं, न भिन्नाः ।।

१२वेंअध्याय में सृष्टि का विस्तार से वर्णन किया गया है (श्लोक ११-३७)। इसमें भी देवत्रय के एकत्व का विधान है। काल तथा माया का वर्णन (श्लोक ६०-६६)। उपनिषद् की यह प्रख्यात् अद्वैतभावना यहाँ भी उल्लिखित है– एकमेवाद्वयं

ब्रह्म नेह नानाऽस्ति किञ्चन (श्लोक ६०) और इसी भावना के फलस्वरूप तीन देवों में अभेद है।

१३वेंअध्याय में ब्रह्मा से क्रुद्ध होने वाले शङ्कर को विष्णु ने त्रिदेवों का एकत्व प्रतिपादित कर शान्त किया। एकत्वप्रतिपादक श्लोक बड़े ही भावसम्पन्न हैं। (श्लोक ४८-५०)।

१४वें और १५वें अध्यायों में सती का शिव के साथ विहार वर्णित है। जिसमें ऋतुवर्णन और संयोगशृंगार का सुमधुर काव्यात्मक चित्रण है।

१६वेंअध्याय में पिता द्वारा किये गये शिव के अपमान से क्षुब्ध हो सती का देहत्याग, सतीवियोग में विजया का करुणक्रन्दन, **१७वेंअध्याय** में शिवगणों द्वारा दक्षयज्ञविध्वंस, **१८वेंअध्याय** में शिव का सती हेतु रुदन, वाष्प को रोकने हेतु शनि के प्रयत्न, सती के शव को शिर पर लेकर, विचरण ब्रह्मा, विष्णु और शनि द्वारा सती के शव के अङ्गों के गिरने से शक्ति पीठों की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है।

१९वेंअध्याय में शिवसंताप निवारण हेतु ब्रह्मा प्रबोधन करने हेतु शिवको शिप्रा सरोवर पर ले जाते हैं जहाँ से शिप्रा नदी का प्राकट्य हुआ है। यहीं शिप्रा उत्पत्तिप्रसङ्ग में अरुन्धती के विवाह से उत्पन्न जल का उल्लेख हुआ है। यहीं से कथाप्रवाह अरुन्धती की पूर्वजन्म की तपस्या एवं उसके चरित की ओर मुड़ता है। क्योंकि चन्द्रभागपर्वत पर सन्ध्या ने तपस्या आरम्भ की थी। **२०वें और २१वें** अध्याय में सन्ध्या की तपस्थली चन्द्रभागपर्वत और चन्द्रभागा नदी की उत्पत्ति के प्रसङ्ग में पत्नियों के साथ भेद-भाव करने के कारण चन्द्रशाप तथा उसके मुक्ति की कथा वर्णित है। पुराण का **२२वाँ** और **२३वाँ** अध्याय अरुन्धतीजन्म और विवाह से सम्बन्धित है।

अन्ततः ब्रह्मा ने शिव के अन्तः में स्थित योगमाया की ही स्तुति की, कि वे शिव के हृदय में अपना आवास छोड़ दें तब विष्णु ने वहाँ स्थित हो शिव को शान्त किया। इस निमित्त विष्णु ने क्या किया ? यह बताने हेतु मार्कण्डेय मुनि ऋषियों को आदि वाराहसर्ग की गाथा सुनाते हैं जो **२४वें अध्याय** से प्रारम्भ होकर पुराण के **४०वें अध्याय** में वर्णित वाराह के पुत्रों तथा धरती के गर्भ से उत्पन्न वाराह पुत्र नरकासुर के चरित्र तक जाती है। इस क्रम में **२४वें अध्याय** में प्रलय (संहार) कथन, **२५वें अध्याय** में आदि वाराहसर्ग, **२६ से २७ अध्याय** तक सृष्टि का वर्णन करते हुए संसार की अनित्यता का वर्णन किया गया है। **२८वें अध्याय** में जगत की असारता, **२९वें अध्याय** में वाराह और उसकी संततियों द्वारा उत्पीड़न

का वर्णन मिलता है। **३०वें अध्याय** में भगवान शिव का शरभावतार और शरभवाराह युद्ध वर्णित है। इसी में नृसिंह और नरनारायण के अवतार का अद्भुत वर्णन हुआ है। **३१वें अध्याय** में यज्ञवाराह और उसके बच्चों के शरीर से यज्ञ एवं यज्ञपात्रों की उत्पत्ति, **३२वें अध्याय** में मत्स्यअवतार का और **३३वें ३४वें अध्यायों** में अकालप्रलय, प्रलयानन्तर सृष्टि का वर्णन, **३५वें अध्याय** में शरभकायत्याग की कथा आई है। **३६ से ४० अध्यायों** तक में क्रमशः नरकासुरजन्म, उसका अभिषेक, उसकी तपस्या एवं राज्य और अन्त का वर्णन किया गया है।

४१ से ४५ अध्यायों में काली का **पार्वतीचरित** वर्णित है, यहाँ हिमालय पुत्री के रूप में पार्वती का जन्म, कामदहन, पार्वतीतप, शिवपार्वती विवाह एवं दोनों के एकात्मतावश काली के अर्धनारीश्वररूप प्राप्ति के रहस्य का वर्णन सराहनीय है।

कालिकेय खण्ड (४६ से ९० अध्याय)

पुराण के इस खण्ड का प्रारम्भ ही प्रथमखण्ड के कालिका के अर्धनारीश्वर रूप के रहस्य के ज्ञाता भृङ्गी और महाकाल के उत्पत्ति प्रसङ्ग में शिव के महामैथुन एवं उससे उत्पन्न भय का वर्णन **४६वें अध्याय** से होता है। **४७वें अध्याय** में वेताल और भैरव के जन्म की चर्चा के साथ ही शिव के मनुष्यावतार चन्द्रशेखर के चरित का आरम्भ होता है। **४८वें अध्याय** में काली के तारावती के रूप में जन्म और चन्द्रशेखर से उनके विवाह का वर्णन किया गया है। **४९वें अध्याय** में तारावती और कपोतमुनि के उपाख्यान के साथ ही चित्राङ्ग की उत्पत्ति, **५०वें अध्याय** में तारावती रूपी काली और कपालीरूपमय शिव के संयोग से वेताल और भैरव की उत्पत्ति, **५१वें अध्याय** में वेताल और भैरव की उदासीनता, कपोतमुनि द्वारा उनको शिवाराधन की प्रेरणा का वर्णन मिलता है। यहाँ वशिष्ठ की गुरु रूप में प्रस्तुति हुई है। **५२वें से ७१वें अध्याय** तक के बीस अध्यायों में काली और उनके विविधरूपों से सम्बन्धित पूजाविधियों एवं पूजोपचारों का विशद वर्णन और्व-सगर संवाद और वशिष्ठवेतालादि संवाद के रूप में हुआ है। प्रसङ्गतः महिषासुर के अनेक जन्मों और दुर्गोत्सव का आदि का भी सुन्दर वर्णन मिलता है। इन अध्यायों में शक्तिसाधना सम्बन्धी अनेक तंत्रों का समन्वय भी मिलता है। **७२वें से ७५वें अध्यायों** तक में कामाख्या देवी के माहात्म्य, पूजनकवच यात्रादि वर्णनप्रसङ्ग में विविध देवों, त्रिपुरामहात्म्य और पूजनविधान का वर्णन भी आया है। **७७ से ८३**

तक के ७ अध्यायों में कामरूपमण्डल की स्थिति और ब्रह्मपुत्रनद की उत्पत्ति तथा परशुरामचरित का भी संक्षिप्त वर्णन मिलता है।

८४ से ८८ तक के अध्यायों में राजधर्मवर्णन के अन्तर्गत विविध अवसरों पर राजा के कर्तव्यों का निर्देश किया गया है।

८९वें और ९०वें अध्यायों में वेताल और भैरव की संततियों का वर्णन एवं उपसंहार रूप में कालिकापुराण के माहात्म्य का निर्देशन हुआ है।

कालिकापुराण का वैशिष्ट्य–

देवी के ९ रूपों का दुर्गा अर्थात् शक्ति के रूप में उल्लेख मिलता है। इस पुराण का भी विस्तार ९० अध्यायों में हुआ है। मार्कण्डेय मुनि देवी- माहात्म्य के मुख्यवक्ता हैं। जिन्होंने मार्कण्डेय पुराण के १३ अध्यायों में योग- निद्रा, महिषमर्दिनी एवं सरस्वती के चरितों वर्णन किया है वे ही यहाँ योगनिद्रा (काली) से सम्बन्धित नाम रूपों के चरित और उनकी उपासनापद्धतियों का वर्णन करते दिखाई देते हैं।

मनुष्य की एक मूलभूत प्रवृति काम को भले ही वह कामदेव ही क्यों न हो। इसका आधारबिन्दु बनाया गया है। काम के प्रादुर्भाव और तत्कालिक क्रिया-कलाप के फलस्वरूप शिवद्वारा ब्रह्मादि की भर्त्सना, बदले की भावना से शिव को कामप्रभावित दिखाने के लिये काली का सतीरूप में अवतरण, सन्ध्या की काम के प्रभाव को संयमित करने की कामना से तपस्या, बाराह के पृथिवी के साथ अधार्मिककामाचरण से नरकासुर की उत्पत्ति, शिव-पार्वती की कामाचारावस्था को देख, देवताओं की व्यग्रता, भृङ्गी-महाकाल जैसे नामों का वेताल और भैरव के रूप में जन्म, चन्द्रमा का स्त्रीप्रसङ्ग, कपोतमुनि की तारावती के प्रति भावनाएँ सब इस पुराण के मूल चिन्तनबिन्दु के रूप में काम एवं उसके प्रभाव और उस प्रभाव के दुष्परिणाम तथा उसपर नियंत्रण के महत्व को ही निर्देशित करती हैं।

इसमें प्रसङ्गतः अनेक सुन्दरस्तुतियों एवं शिव, काली तथा अन्य देवी देवताओं की उपासना पद्धतियों का महत्वपूर्ण वर्णन किया गया है। शाक्त, तान्त्रिक उपासना विधि का तो यह आकरग्रन्थ सिद्ध होता है। सती, पार्वती चरित सम्बन्धी कथानक तो शिवपुराणदि में भी मिलते हैं किन्तु अरुन्धती- चरित, नरकासुरचरित और वेताल-भैरवचरित की योजना में इसकी अपनी प्रस्तुति है जिसमें चन्द्रभागा नदी के प्रसङ्ग में पर्यावरण, चन्द्रमाचरित में बहुपत्नीत्वदोष, अतिभोग से क्षयरोग की प्राप्ति, उसके निवारण, सतीवियोग के प्रसङ्ग में अतिवृष्टि और जलप्लावन से बचाव हेतु शनि ग्रह की उपासना और शव आदि के क्षरण में शनि के प्रभाव आदि अनेक

विषयानुक्रमणिका

नवशक्ति ग्रन्थमाला - ५

कल्याणी हिन्दी टीका

कालिकापुराणम्

(कालिकेयखण्ड)

सम्पादक/टीकाकार

आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी

नवशक्ति प्रकाशन,

चौकाघाट, वाराणसी

२००८ ई.

विषयानुक्रमणिका